UNIVERSITY OF CAMBRIDGE

ORIENTAL STUDIES TRIPOS Part II

South Asian Studies

Friday 30 May 2008 09.00 – 12.00

SA.17 HINDI TEXTS, 4

*Candidates should translate **all** Hindi passages into English and answer **two** out of the four essay questions.*

*Write your number **not** your name on the cover sheet of **each** Section booklet.*

STATIONERY REQUIREMENTS
20 Page Answer Book x 1
Rough Work Pad

You may not start to read the questions printed on the subsequent pages of this question paper until instructed that you may do so by the Invigilator.

1. Translate the following passage into **English**:

अब रिक्शा एक ऐसी जगह से गुजर रहा था, जहाँ एक होटल के सामने स्थित फुटपाथ पर आठ-दस आदमी खड़े थे। उनमें दो या तीन पहलवान की तरह थे और लाल अँगोछा तथा बनियान पहने थे। उनमें से किसी एक ने रिक्शे की ओर इशारा किया। इसके बाद सभी खूँखार दृष्टि से रिक्शे की ओर घूरने लगे। सहसा दाढ़ीवाले मुसलमान के मुँह से निकला, 'या खुदा!' राम ने चौंककर देखा। दाढ़ीवाले व्यक्ति ने अपना माथा रिक्शे की पीठ पर टेक दिया था। उसकी आँखें ऊपर टँग गई थीं और उसके पैर बुरी तरह काँप रहे थे। कारण समझने में उसको देरी नहीं लगी, जिससे वह स्वयं इतना डर रहा था, उसको इस तरह डरा हुआ देखकर उसको कुछ संतोष हुआ! पर क्या वह मरनेवाला तो नहीं! कुछ देर पहले उसकी भी तो ऐसी ही हालत हो गई थी!

"सुनिए··· होश में आइए···" राम ने उसके शरीर को हिलाकर कहा।

दाढ़ीवाले व्यक्ति ने बहुत ही बेचारगी से उसकी ओर देखा। पर उसके मुँह से कोई आवाज नहीं निकली।

"क्या तबीयत खराब है?"

"न···हीं···" उसके मुँह से अस्फुट स्वर निकला।

"कोई बात नहीं है।" राम ने आश्वासन दिया।

उसके मुँह से अनजाने में ये बातें निकली थीं और इस पर उसको कुछ आश्चर्य हुआ। उसको याद आया कि कुछ दिन पहले वह इंसान था। हाँ, इंसान! क्या अभ्यासवश उसके मुँह से ये बातें निकली थीं!

रिक्शा आगे निकल गया। अब वह दाढ़ीवाला व्यक्ति सीधा बैठ गया था।

AMARKANT, "Maut kaa Nagar", pp. 35-36.

(15 marks)

2. Translate the following passage into **English**:

"वहाँ से बर्फ का रंग बिल्कुल नीला दीखता है। मैंने एक कलर्ड फोटो लिया है..." वह उस फोटो को लाने के लिए दूसरे कमरे में चले गये। मैं मेज पर रखी अलबमों को उलटने-पलटने लगा। हर फोटो में शिमले का कोई-न-कोई दृश्य था : ग्लैन, जाखू, चैटविक फॉल। मैंने इन सब स्थानों को आसानी से पहचान लिया। कुछ देर बाद जब बीरेन चाचा नहीं आये, तो मैं ऊब गया। पास किताबों के शेल्फ पर एक छोटा-सा अलबम कोने में रखा था, मैंने उसे खोला और खोलते ही एक क्षण के लिए मुझे लगा—यह चेहरा मैंने कहीं देखा है, किन्तु दूसरे ही क्षण मेरी आँखें स्तब्ध-सी स्थिर हो गयीं। फोटो माँ का था।

क्या माँ कभी ऐसी थीं? मेरे भीतर कहीं एक गहरा-सा साँस उखड़ आया। वही चौड़ा-सा माथा, किन्तु उस पर छोटी-सी बिन्दी लगी थी, जो माँ अब नहीं लगातीं, दोनों चोटियाँ कन्धे के नीचे लटक रही थीं, पूरे स्लीव का स्वेटर पहन रखा था और बालों के भीतर वही छोटे-छोटे कान छिपे थे। सहसा मुझे आभास हुआ कि इस चेहरे में कुछ ऐसा है, जिसका मुझसे कोई सम्बन्ध नहीं, बाबू से कोई सम्बन्ध नहीं।

फोटो माँ का था, लेकिन उसमें माँ कहाँ थीं?

अचानक मुझे बीरेन चाचा के पैरों की आहट सुनायी दी। न जाने मेरे भीतर क्या चोर छिपा था कि मैंने डरकर झटपट वह अलबम किताबों में छिपा दी।

जब हम वापिस लॉन में आये तो हल्का, फीका-फीका-सा अँधेरा छाने लगा था। माँ शाल में दुबकी हुई पत्थर की बेंच पर बैठी थीं।

"इतनी देर कहाँ लगा दी?" उन्होंने मुझे खींचकर अपने से सटा लिया। बीरेन चाचा माँ के पैरों के निकट घास पर बैठ गये। मेरी आँखें माँ के चेहरे पर टिकी रहीं, मानो मैं कुछ खोज रहा हूँ, माँ की आँखें, मुँह, माथा हर चीज अलग-अलग देखो तो वैसी ही थी, किन्तु आपस में मिलकर जो भाव बनता था, वह उस चेहरे से बिल्कुल अलग था, जो मैंने अभी कुछ देर पहले बीरेन चाचा की अलबम में देखा था।

NIRMAL VERMA, "Andhere Mem", pp. 43

(20 marks)

3. Translate the following passage into **English**:

कृपाचार्य. बैठो,
इधर बैठो वत्स
हम सब हैं साथ तुम्हारे
इस प्रतिहिंसा में
किन्तु यदि छिप कर आक्रमण के सिवा
कोई दूसरा पथ निकल आये।

अश्वत्थामा. दूसरा पथ!
पांडवों ने क्या कोई दूसरा पथ छोड़ा है?
पांडवों की मर्यादा
मैंने आज देखी द्वन्द्वयुद्ध में,
कैसे अधर्मयुक्त वार से
दुर्योधन को नीचे गिरा दिया भीम ने
टूटी जाँघों, टूटी कोहनी, टूटी गर्दन वाले
दुर्योधन के माथे पर रख कर पाँव
पूरा बोझ डाले हुए भीम ने
बाँहें फैला कर पशुवत् घोर नाद किया
कैसे दुर्योधन की दोनों कनपटियों पर
दो-दो नसें सहसा फूलीं और फूट गयीं
कैसे होठ खिंच आये
टूटी हुई जाँघों में एक बार हरकत हुई
आँखें खो
दुर्योधन ने देखा,
अपनी प्रजाओं को।

कृपाचार्य. बस करो अश्वत्थामा
शायद तुम्हारा ही पथ
एक मात्र सम्भव पथ है।

DHARAMVEER BHARTI, *Andha Yug*, pp. 51

(15 marks)